चार्ल्स "चिक" शेवर

**अब
जब मैं
मसीही हूँ**

युवाओं के लिए मूलभूत बाइबल अध्ययन

युवाओं के लिए मूलभूत बाइबल अध्ययन
चार्ल्स "चिक" शेवर (Charles "Chic" Shaver)

कॉपीराइट © 2024
Nazarene Publishing House
ये अध्ययन Nazarene Publishing House द्वारा तैयार किए गए थे

मार्क गिलरॉय, सम्पादक
जेनिस जे. ग्रीनो, सम्पादकीय सहायक

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण [द बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया वर्ज़न हिंदी – ओ.वी. (री-एडिटेड)] में से हैं

अध्ययन साथी के लिए निर्देश

नये विश्वासी के साथ कार्य करने के लिए धन्यवाद!

ये अध्ययन इस तरह से तैयार किए गए हैं, कि आप हर सप्ताह एक अध्ययन को दे सकते हैं। आपको बाकी अध्ययन अगली सभा तक बचाए रखने चाहिए।

1. इन बाइबल अध्ययनों का उद्देश्य

इस मार्गदर्शिका का उद्देश्य नए मसीहियों को एक मसीही मिल का समर्थन, मार्गदर्शन और प्रोत्साहन देने में सहायता करना है। आपकी भूमिका उनके साथ परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना, उनके साथ प्रार्थना करना और उनके साथ सार्थक समय बिताना है। ये अध्ययन आपको ऐसा करने में सहायता करेंगे।

2. शीघ्र मिलें

नए मसीही से शीघ्र-अतिशीघ्र मिलने का प्रयास करें, आदर्श रूप से उनके मन-परिवर्तन के 24 घंटों के भीतर ही। इस समय का उपयोग साथ में प्रार्थना करने के लिए करें। फिर, उन्हें अध्ययन संख्या 1 और स्मरण पद संख्या 1 (शीट से काटकर) दें।

3. प्रत्येक अध्ययन के लिए तैयारी करें

प्रत्येक अध्ययन की पहले ही से समीक्षा करें। यदि आपके पास सही उत्तरों या कुछ पदों के अर्थ के बारे में कोई सवाल है, तो उन पर चर्चा करने के लिए अपने पास्टर या युवा अगुवे के साथ समय निर्धारित करें। प्रत्येक अध्ययन में नए मसीही के लिए अपने सवाल लिखने के लिए स्थान है। यदि आप उनका उत्तर नहीं दे सकते हैं, तो अपनी अगली सभा से पहले अपने पास्टर या युवा अगुवे से परामर्श करें।

4. नियमित रूप से सभा के लिए मिलने का समय निर्धारित करें

अगले आठ सप्ताहों तक, किसी के घर में, सभा के लिए एक नियमित साप्ताहिक समय और स्थान निर्धारित करें। प्रत्येक सत्र में, पिछले अध्ययन की समीक्षा करें, पुष्टि करें कि उन्होंने याद किए जाने वाले वचन को स्मरण कर लिया है, और फिर उन्हें अगला अध्ययन और स्मृति पद दें। इस प्रक्रिया को तब तक जारी रखें, जब तक कि सभी आठ अध्ययन पूरे न हो जाएँ।

यदि नए मसीही ने कोई अध्ययन पूरा नहीं किया है, तो उस पर मिलकर काम करने में समय बितायें।

5. आत्मिक उन्नति को प्रोत्साहित करें

हर सप्ताह उनकी आत्मिक यात्रा की जाँच करने में समय बितायें। उन्हें “मेरी आत्मिक पत्रिका” अनुभाग में अपने विचार और मनन दर्ज करने के लिए प्रोत्साहित करें। साथ में प्रार्थना करने में कुछ समय बितायें। यह अध्ययन श्रृंखला तब सबसे अच्छी तरह काम करती है, जब नए मसीही और अध्ययन साथी के बीच एक गर्मजोशी भरा, और देखभाल करने वाला सम्बन्ध विकसित नहीं हो जाता।

6. अपनी सभा की प्रगति रिकॉर्ड करें

“प्रगति का रिकॉर्ड” का उपयोग करें। प्रत्येक सत्र के बाद, यह कैसा रहा, इस पर एक संक्षिप्त नोट बनाएँ। इससे आपको विशिष्ट प्रार्थना आवश्यकताओं को स्मरण रखने में सहायता मिलती है और आपके पास्टर या युवा अगुवे को नए मसीही की प्रगति के बारे में जानकारी रखने में सहायता मिलती है।

7. अंतिम अध्ययन के बाद

- अपने और अपने पास्टर (या युवा अगुवे) द्वारा हस्ताक्षरित, मान्यता प्रमाण पत्र प्रस्तुत करें। पास्टर आराधना सेवा के दौरान इसे आपके साथ प्रस्तुत करना चुन सकता है।
- प्रगति दस्तावेज लिफाफा अपने पास्टर या युवा अगुवे को दें, ताकि उनके पास आपकी सेवकाई का अभिलेख हो।
- निरन्तर आत्मिक उन्नति के लिए एक योजना बनाने पर चर्चा करें। उन्हें कलीसिया और युवा समूह में संलग्न रहने के लिए प्रोत्साहित करें, और बाइबल अध्ययन, प्रार्थना और व्यक्तिगत साझा करने के लिए एक छोटा समूह आरम्भ करने पर विचार करें।
- किसी व्यक्ति को यीशु मसीह का अनुयायी बनकर बढ़ने में सहायता करने के अवसर के लिए प्रभु को धन्यवाद देने के लिए कुछ समय निकालें।

अध्ययन 1

मुझे क्या हुआ है?

वास्तविक जीवन

जब से जेसन डेमन को जानता था, वह डेमन के जीने के तरीके की सराहना करता था। डेमन उन सभी लोगों से अलग था, जिनसे वह कभी भी मिला था। जब जेसन के माता-पिता का तलाक हुआ, तो किसी भी अन्य मिला से अधिक डेमन उसकी बात सुनने और उसकी भावनाओं को सुलझाने में उसकी सहायता करने के लिए उपस्थित था। उन वार्ताओं में से एक के दौरान, डेमन ने बताया कि कैसे यीशु मसीह के साथ एक व्यक्तिगत सम्बन्ध ने उसके जीवन में बदलाव आया। उसने जेसन से पूछा कि क्या वह भी वैसा ही जीवन बदलने वाला सम्बन्ध चाहता है। जेसन ने हाँ कहा, और डेमन के साथ एक सरल प्रार्थना की। अब जेसन के पास एक सवाल है: “मुझे पता है कि मैंने एक प्रार्थना की है। मुझे पता है कि कुछ तो अलग है, लेकिन वास्तव में ऐसा क्या हुआ है जिसने मुझे बदल दिया है?”

पवित्रशास्त्र से खोज

बाइबल में निम्नलिखित सवालों के जवाब ढूँढ़िए।

यदि आपके पास बाइबल नहीं है, तो ऐसे मसीही मिला और कलीसियाएँ हैं, जो आपको बाइबल उपलब्ध करवाने में प्रसन्नता अनुभव करेंगे।

जब कोई पवित्रशास्त्र यूहन्ना 1:12 के रूप में सूचीबद्ध होता है, तो इसका अर्थ है कि आप यूहन्ना की पुस्तक, 1 अध्याय, 12 पद खोल कर पढ़ें। बाइबल के आरम्भ में दी हुई सूची प्रत्येक पुस्तक की पृष्ठ संख्या सूचीबद्ध करती है। बाइबल में से उत्तर को ढूँढ़ें, फिर उसे अपने शब्दों में लिखें।

- जब मैंने व्यक्तिगत निमंत्रण के द्वारा मसीह को ग्रहण किया, तब मैं परमेश्वर की _____ बन गया (यूहन्ना 1:12)।
- किसी व्यक्ति के जीवन में मसीह का आना एक व्यक्तिगत सम्बन्ध है, जिसका वर्णन मसीह ने प्रकाशितवाक्य 3:20 में किया है।
 - द्वार पर कौन खटखटा रहा है? (पहचानने के लिए प्रकाशितवाक्य 1:1 देखें।) _____
 - उसके शब्द और उसके खटखटाने का जवाब कौन देगा? _____
 - वह मुझसे क्या करवाना चाहता है? _____
 - अगर मैं द्वार खोल दूँ, तो वह क्या करेगा? _____
 - मैं द्वार कैसे खोलूँ? (प्रकाशितवाक्य 3:19 देखें।) _____
 - क्या आपने द्वार खोला है? _____
 - यीशु मसीह इस समय कहाँ है? _____
- मसीह हमें ढूँढ़ने और हमारा उद्धार करने क्यों आया? (लूका 19:10) _____
- रोमियों 3:23 के अनुसार हम खोए हुए क्यों हैं? _____
- बाइबल के अनुसार पाप की सज़ा या मजदूरी क्या है? (रोमियों 6:23) _____
- रोमियों 5:8-9 के अनुसार, मेरे पापों के लिए कौन पहले से ही मर चुका है? (अधिक जानकारी के लिए यशायाह 53:6 को पढ़ें।) _____
- जब मैंने अपने पापों को मान लिया, तो परमेश्वर ने क्या किया? (1 यूहन्ना 1:9) (टिप्पणी: 1 यूहन्ना, जिसे “पहला यूहन्ना” कहा जाता है, यह नए नियम के लगभग अन्त में मिलता है। यह यूहन्ना के पत्रों में से एक है, और यह यूहन्ना के सुसमाचार से भिन्न है, जो नए नियम के आरम्भ में पाया जाता है।)
- यशायाह 55:7 में उन शब्दों को रेखांकित करें, जो आपको बताते हैं कि सच्चे मन से किए गए पापों के बारे में आपको क्या करना चाहिए।

“दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरे, वह उस पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा।”

9. इफिसियों 2:8-9 के अनुसार, हमें उद्धार कैसे मिलता है? (सही उत्तर के सामने वाले बॉक्स पर निशान लगाएँ):

- a. बहुत सारे अच्छे काम करना
- b. सही काम करने का पूर्ण प्रयास करना
- c. विश्वास के द्वारा परमेश्वर की क्षमा स्वीकार करना

10. जब हम उद्धार प्राप्त कर लेते हैं और मसीह में नई सृष्टि बन जाते हैं, तो हमारे लिए परमेश्वर का उद्देश्य क्या है? (इफिसियों 2:10) _____

11. हम परमेश्वर को किसके द्वारा जान पाते हैं? (यूहन्ना 14:6, 9) _____

12. 1 यूहन्ना 5:13 को पढ़िए। उन लोगों का क्या होगा जो परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह, पर सच्चा विश्वास करते हैं?

- a. वे अनन्त जीवन पाने की आशा रखते हैं
- b. वे सोचते हैं कि उन्हें अनन्त जीवन मिल सकता है
- c. वे निश्चित रूप से जानते हैं कि उनके पास अनन्त जीवन है

13. अगर मैं आज रात मर जाऊँ, तो मैं कहाँ जाऊँगा? (यूहन्ना 6:45-47) _____

इस अध्ययन के विषय में मेरे सवाल

जीवन में लागू करना

1. एक संक्षिप्त वाक्य में लिखें कि आप कैसे जानते हैं कि आप परमेश्वर की सन्तान हैं। _____

2. अब जबकि मेरा आत्मिक रूप से नया जन्म हो चुका है और मैं परमेश्वर की सन्तान हूँ (यूहन्ना 3:3-7), मुझे बढ़ने के लिए आत्मिक भोजन की आवश्यकता होगी। मेरे आहार में सबसे पहली वस्तु क्या है? (मत्ती 4:4) _____

नीचे कुछ अच्छे सुझाव दिए गए हैं। इन्हें करते समय प्रत्येक पर निशान लगाते जाएँ:

- रोज़ाना बाइबल पढ़ें। यह आपके आहार की पहली वस्तु है। हर दिन एक समय निर्धारित करें। यूहन्ना के सुसमाचार की पुस्तक से आरम्भ करें – हर दिन एक अध्याय या कुछ पद पढ़ें। “पवित्रशास्त्र से खोज” अनुभाग में कई सवाल यूहन्ना से आते हैं।
- हर दिन प्रार्थना करें। अपने हृदय की बातों के बारे में परमेश्वर से बात करें।
- जब भी संभव हो कलीसिया में जाएँ। सुनिश्चित करें कि यह ऐसी कलीसिया हो जो बाइबल का प्रचार करती हो और मसीह को ऊँचा उठाती हो।
- पवित्रशास्त्र को स्मरण करें। भजन 119:11 कहता है कि, “मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरुद्ध पाप न करूँ।” पवित्रशास्त्र को स्मरण करने से हमें परमेश्वर की आज्ञा मानने में सहायता मिलती है। प्रत्येक अध्ययन को स्मरण करने वाले पद को स्मरण रखना न भूलें।
- परमेश्वर की आज्ञा मानें। यदि आपको संदेह है कि कोई बात सही है या नहीं, तो स्वयं से पूछें, “यीशु क्या करता?”
- गवाही दीजिए। किसी को बताइए कि प्रभु ने आपके लिए क्या किया है।

स्मृति पद

“देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूँगा और वह मेरे साथ।” (प्रकाशितवाक्य 3:20)

मेरी आत्मिक पत्रिका

अब आपको “मुझे क्या हुआ है” की बेहतर समझ है। हालाँकि, यह आपके सबसे बड़े रोमांच का आरम्भ मात्र है – अभी और भी बहुत कुछ है!

अध्ययन 2

परमेश्वर के साथ चलना

वास्तविक जीवन

जेसन निराश अनुभव कर रहा है। वह हाल ही में एक मसीही बना है, और उसने अपने जीवन में कुछ बड़े बदलाव देखे हैं। हालाँकि, वह अभी भी अपने कुछ व्यवहारों और कार्यों से जूझ रहा है। उसे अपनी माँ पर गुस्सा करने के लिए बुरा लगता है, जब उसने तीसरी बार उससे अपने काम करने के लिए कहा था। जेसन सोचता है कि, “मसीही बनने के पश्चात, आप एक मसीही के समान कैसे जीते हैं?” शायद आपने स्वयं से भी यही सवाल पूछा हो।

एक बार जब बच्चा शारीरिक रूप से जन्म ले लेता है, तो उसे बढ़ना आरम्भ करना चाहिए, जिसमें चलना सीखना भी आता है। आत्मिक रूप से भी यही सच है। परमेश्वर का बच्चा परमेश्वर के साथ चलना सीखता है – एक-एक कदम करके।

पवित्रशास्त्र से खोज

- जब आप यूहन्ना के सुसमाचार को पढ़ते हैं, तो आप अलग-अलग अभिव्यक्तियों को देख सकते हैं, जिनका अर्थ एक ही है, अर्थात् परमेश्वर के साथ चलना। उनमें से कुछ क्या हैं?
 - यूहन्ना 8:12 _____
 - यूहन्ना 1:37 _____
 - यूहन्ना 2:5 _____
 - यूहन्ना 5:14 _____
- परमेश्वर के साथ हमारे चलने का विरोध कौन करता है? (1 पतरस 5:8) _____
- मत्ती 4:1 में शैतान ने क्या किया? _____
- क्या यीशु ने प्रलोभन के आगे घुटने टेक दिए? (इब्रानियों 4:15) _____
क्या प्रलोभन और पाप एक ही हैं? _____
(प्रलोभन पूछता है, “क्या तुम करोगे?” पाप कहता है, “मैं करूँगा” – और ऐसा कर डालता है।)
- जब शैतान हम पर हमला करता है, तो हमें क्या करना चाहिए? (याकूब 4:7) _____
- यशायाह 59:2 कहता है कि, “परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों [अनावश्यक चोट पहुँचाने वाले कार्य] ने तुमको तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है; और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुख तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता।” एकमाल चीज़ जो मुझे परमेश्वर से अलग कर सकती है, वह क्या है? _____
- क्या एक मसीही, मसीह की सामर्थ्य के द्वारा, जानबूझकर पाप करने से बच सकता है? (1 यूहन्ना 3:9) _____
- यदि कोई मसीही पाप करता है, तो 1 यूहन्ना 1:9 और 2:1 के अनुसार उसे क्या करना चाहिए? (सही उत्तर पर निशान लगाएँ)
 - वे कहें कि वे पाप करने से रुक नहीं सकते।
 - अपने पाप को छिपायें और ऐसा दर्शाएँ कि ऐसा हुआ ही नहीं।
 - तुरन्त यीशु मसीह के पास जाएँ, पाप को स्वीकार करें, और परमेश्वर के लिए जीना जारी रखें।
- यदि एक मसीही ने पाप किया है और वह उसका अंगीकार करता है, तो परमेश्वर क्या करेगा? (1 यूहन्ना 1:9) _____
- यूहन्ना 14:21 के अनुसार, मसीह की आज्ञाओं को मानने से क्या प्रमाणित होता है? _____
- यूहन्ना 10:27-29 पढ़िए और इन सवालों के जवाब दीजिए:
 - किसके पास अनन्त जीवन है और परमेश्वर की सामर्थ्य द्वारा सुरक्षित है? _____

अध्ययन 3

परमेश्वर से सीखना

वास्तविक जीवन

जेसन अकेला ऐसा व्यक्ति नहीं है, जो मसीही जीवन जीना और चलना सीख रहा है। जैनिंस, जो कभी-कभी चर्च आती-जाती रहती थी, जेसन के साथ जो हुआ, उससे इतनी प्रभावित हुई, कि उसने परमेश्वर से उसे क्षमा करने के लिए कहा और उसके लिए जीने की नई प्रतिबद्धता जताई। अब तक उसका सबसे बड़ा सवाल यह रहा है कि, “सही और गलत के बारे में इतने सारे विचारों के साथ, मैं कैसे पता लगा सकती हूँ कि परमेश्वर मुझसे क्या चाहता है और क्या आशा करता है? मैं कैसे जानूँ कि क्या सच है?”

हम कैसे जान सकते हैं कि क्या सच है? यह “पवित्रशास्त्र से खोज” आपको परमेश्वर की इच्छा जानने के स्रोत की ओर ले जाएगा।

पवित्रशास्त्र से खोज

1. यूहन्ना 17:17 को पढ़िए। यह परमेश्वर के वचन (बाइबल) का वर्णन कैसे करता है? _____
2. हमें पवित्रशास्त्र कैसे दिया गया, ताकि हम इसकी सच्चाई के प्रति आश्चस्त हो सकें? (2 तीमथियुस 3:16) _____
3. परमेश्वर का वचन हमारे लिए क्या करेगा, इनके अनुसार:
 - a. 2 तीमथियुस 3:14-15 _____
 - b. यूहन्ना 15:3 _____
 - c. प्रेरितों 20:32 _____
4. जब आप यूहन्ना के सुसमाचार की पुस्तक को पढ़ते हैं, तो आप परमेश्वर के वचन की महत्व के बारे में निम्नलिखित शिक्षाएँ पा सकते हैं:
 - a. मसीह ने अपने पिता के वचन (आज्ञाओं) के साथ क्या किया? (यूहन्ना 8:55) _____
 - b. कुछ लोगों के जीवन में परमेश्वर के वचन (संदेश या सत्य) का क्या स्थान होता है? (यूहन्ना 8:37) _____
 - c. अगर हम परमेश्वर के हैं, तो हम उसके वचन के विषय में क्या करेंगे? (यूहन्ना 8:47) _____
 - d. मसीह का सच्चा शिष्य वचन (प्रकाशन या शिक्षा) के साथ क्या करेगा? (यूहन्ना 8:31) _____
 - e. आत्मिक और अनन्त जीवन को बनाए रखने के लिए हमें वचन (आज्ञा, शिक्षा, या कथन) के साथ क्या करना चाहिए? (यूहन्ना 8:51) _____
5. अगर मैं मसीह से प्रेम करता हूँ, तो मैं क्या करूँगा? (यूहन्ना 14:23) _____
6. यूहन्ना 20:31 को पढ़ें। परमेश्वर का वचन क्यों लिखा गया था? _____
यदि मैं इस पर विश्वास करूँ, तो मुझे क्या उपहार अर्थात् वरदान मिलेगा? _____
7. शैतान हमें हराने का प्रयास कर सकता है, लेकिन परमेश्वर ने हमें उसे हराने के लिए एक हथियार दिया है। यह “आत्मा की तलवार” है, जो क्या है? (इफिसियों 6:17) _____
8. मत्ती 4:4, 7, 10 में यीशु ने शैतान का विरोध कैसे किया? _____

अध्ययन 4

परमेश्वर से बात करना

वास्तविक जीवन

“आप उस परमेश्वर से कैसे बात करते हैं, जिसे आप देख भी नहीं सकते हैं?” जेसन को यह स्वीकार करना पड़ा, कि उसके पड़ोस के मित्र मार्क ने, एक बहुत अच्छा सवाल पूछा था। केवल एक महीने पहले, जेसन ही यह सवाल पूछ रहा होता। अब, एक नए मसीही के रूप में, वह इसका उत्तर देने का प्रयास कर रहा है। लेकिन कई बार उसे लगता है कि उसकी प्रार्थनाएँ केवल शब्द मात्र ही हैं। जेसन सोचता है, “आप उस परमेश्वर से कैसे बात कर सकते हैं जिसे आप देख ही नहीं सकते, और आप इसे अपने मित्र को कैसे समझा सकते हैं?”

भजन संहिता के लेखक ने कहा: “हे यहोवा, भोर को मेरी वाणी तुझे सुनाई देगी, मैं भोर को प्रार्थना करके तेरी बात जोहूँगा” (भजन संहिता 5:3)। आइए हम बाइबल द्वारा हमें “प्रार्थना” नामक रोमांचक कार्य के बारे में दी गई अन्य सम्मतियों की खोज करें।

पवित्रशास्त्र से खोज

1. क्या यीशु अपने पिता के साथ प्रार्थना करने के लिए एकान्त समय की आवश्यकता पर विश्वास करता था? (मरकुस 1:35) _____
2. मुझे कब प्रार्थना करनी चाहिए? (लूका 18:1) _____
3. हर प्रार्थना में कैसा रवैया या अभिव्यक्ति होनी चाहिए? (1 थिस्सलुनीकियों 5:17-18) _____
4. भजन संहिता 66:18 के अनुसार प्रार्थनाओं का उत्तर न मिलने का एक प्रमुख कारण क्या होता है? _____
5. हमारी प्रार्थनाएं किस बात द्वारा निर्धारित होनी चाहिए? (1 यूहन्ना 5:14) _____
6. क्या आपने प्रार्थना के विषय में यूहन्ना के सुसमाचार से कुछ बातें सीखी हैं?
 - a. हर मसीही को क्या सौभाग्य प्राप्त है? (यूहन्ना 16:24) _____
 - b. प्रार्थना का उत्तर देने के पीछे परमेश्वर का क्या उद्देश्य है? (यूहन्ना 14:13) _____
 - c. मसीह हमारी विनतियों का उत्तर देने के लिए हमसे क्या अपेक्षा रखता है? (यूहन्ना 15:7) _____
7. उत्तर पाने के लिए, प्रार्थना करते समय मुझे क्या करना चाहिए? (मत्ती 21:22) _____
8. मैं किन विशेष बातों के लिए प्रार्थना कर सकता हूँ?
 - a. मत्ती 6:11 _____
 - b. मत्ती 9:38 _____
 - c. फिलिप्पियों 1:9 _____
 - d. 1 तीमुथियुस 2:1-2 _____
 - e. याकूब 1:5 _____
9. मसीहियों को “परीक्षा में न पड़ो” से क्या रोक सकता है? (मत्ती 26:41) _____

अध्ययन 5

परमेश्वर के साथ साझा करना

वास्तविक जीवन

आठ मिनट पिछले एक महीने से हर मंगलवार की रात को मिल रहे हैं। डेन, जेसन, जेनिस और पाँच अन्य लोगों ने प्रार्थना करने, बाइबल का अध्ययन करने और एक-दूसरे के आत्मिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए एक समूह बनाया है। उनकी पिछली सभा में, एंजेलो की प्रार्थना सबसे हटकर थी। उसे परमेश्वर की उपस्थिति को अनुभव करने में संघर्ष करना पड़ा था, लेकिन हाल ही में उसे एक सफलता मिली। उसने प्रार्थना की, “हे परमेश्वर, मैं अब आप पर पहले से कहीं अधिक विश्वास करती हूँ! मैं आपको प्रसन्न करना चाहती हूँ, आपकी सेवा करना चाहती हूँ और जो कुछ भी मैं हूँ और जो कुछ भी मेरे पास है, उसे आपके साथ साझा करना चाहती हूँ।”

प्रेरित पौलुस ने भी ऐसा ही विचार व्यक्त किया: “इसलिये तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो” (1 कुरिन्थियों 10:31)। यह अध्ययन इस बात की खोज करता है कि यह सत्य हम में से प्रत्येक पर किस प्रकार से लागू होता है।

पवित्रशास्त्र से खोज

- मत्ती 22:36-40 के अनुसार:
 - मुझे परमेश्वर से कितना प्रेम करना चाहिए? _____
 - मुझे अपने पड़ोसी से कितना प्रेम करना चाहिए? _____
- मैं परमेश्वर और दूसरों के प्रति प्रेम को कैसे प्रकट करूँ? (1 यूहन्ना 5:2-3) _____
- परमेश्वर और उसके उद्देश्य के प्रति पूरी तरह समर्पित होने के विषय में यीशु ने क्या कहा?
 - गेहूँ के दाने को भरपूर फसल लाने के लिए क्या करने की आवश्यकता होती है? (यूहन्ना 12:24-25) _____
 - यदि मैं स्वार्थ के बजाय यीशु मसीह की सेवा करूँ, तो पिता क्या करेगा? (यूहन्ना 12:26) _____
- एक मसीही के रूप में, परमेश्वर के साथ मेरे नए सम्बन्ध के कारण मेरे जीवन में सम्बन्धों के प्रति नए दृष्टिकोण हैं। जब मैं “मसीह में” (एक मसीही, उसके साथ जुड़ा हुआ) होता हूँ, तो पुराने की जगह क्या ले लेता है? (2 कुरिन्थियों 5:17) _____
- भौतिक चीज़ों के प्रति मेरा नया सम्बन्ध:
 - अब मैं चीज़ें [देना] [रखना] चाहता हूँ। (सही शब्द पर गोला बनाएँ) (लूका 6:38)
 - इफिसियों 4:28 में बताई गई बातों के प्रति तीन सही दृष्टिकोणों पर निशान लगाएँ:
 - अब चोरी न करना।
 - कठिन परिश्रमी बनना।
 - मैं जो भी पा सकता हूँ, वह सब पा लूँ।
 - जरूरतमन्दों के साथ बाँटूँ।
 - मेरा रवैया महत्वपूर्ण नहीं है।
 - केवल सर्वोत्तम को ही स्वीकार करूँ।
- दूसरों के प्रति मेरा नया सम्बन्ध:
 - मुझे दूसरे लोगों के लिए क्या होना चाहिए? (इफिसियों 4:32) _____
 - मुझे गैर-मसीहियों के साथ करीबी सम्बन्ध [से बचना चाहिए] [बनाने चाहिये] (सही शब्द पर गोला बनाएँ) ताकि मैं पूरी तरह से एक धार्मिक जीवन जी सकूँ (2 कुरिन्थियों 6:14)।
- स्वयं के प्रति मेरा नया सम्बन्ध:
 - अपने शरीर की देखभाल और उपयोग करते समय, मुझे यह याद रखना चाहिए कि यह क्या है? (1 कुरिन्थियों 6:19) _____
 - मुझे अपने समय और अवसरों का क्या करना चाहिए? (इफिसियों 5:15-16) _____
- मुझे _____ से प्रेम करना चाहिए (1 यूहन्ना 2:10),
फिर भी मुझे _____ से प्रेम नहीं करना चाहिए (1 यूहन्ना 2:15-16)।

6. परमेश्वर हमसे यह अपेक्षा क्यों करता है कि हम उसकी महिमा करें? (1 कुरिन्थियों 6:20) _____
7. यदि मैं परमेश्वर के राज्य को अपने जीवन का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा बनाऊँ (जहाँ परमेश्वर पूरी तरह से नियंत्रण में है) तो परिणाम क्या होगा? (मत्ती 6:31-33) _____
8. जब हम परमेश्वर के प्रेम के प्रत्युत्तर में अपना जीवन उसके साथ बाँटते हैं, तो सबसे अधिक किसे मिलता है? (मरकुस 10:28-30) _____

इस अध्ययन के विषय में मेरे सवाल

जीवन में लागू करना

ऐसे कई तरीके हैं, जिनसे एक व्यक्ति स्वयं को परमेश्वर के साथ साझा कर सकता है। पाँच मुख्य तरीके बताएँ, जिनसे आप स्वयं को परमेश्वर के साथ साझा कर सकते हैं:

1. _____
2. _____
3. _____
4. _____
5. _____

स्मृति पद

“इसलिये तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो।” (1 कुरिन्थियों 10:31)

मेरी आत्मिक पत्रिका

हमने सीखा है कि परमेश्वर के साथ स्वयं को साझा करने में आनन्द है। जब हम दूसरों से मसीह के बारे में बात करते हैं, तो एक विशेष प्रकार का साझा करना भी होता है, जिसे गवाही कहा जाता है। अगले अध्ययन में इस पर चर्चा की जाएगी।

अध्ययन 6

अपना विश्वास साझा करना

वास्तविक जीवन

एंजेला ने अपने जीवन में एक ऐसी खुशी पाई है, जिसके बारे में उसे तब तक पता नहीं था, जब तक कि उसने स्वयं को पूरी तरह से परमेश्वर को समर्पित नहीं कर दिया। उसे एहसास हुआ कि दूसरों को भी उसी तरह के हृदय परिवर्तन की आवश्यकता है, जो उसे मिला है – विशेषकर उसके बड़े भाई कार्ल को। एंजेला कार्ल के नए मित्रों और व्यवहार को लेकर चिंतित है। वह अपने मित्रों और प्रार्थना सहयोगियों से कहती है कि, “मुझे वास्तव में नहीं पता कि उसे क्या कहना है या कैसे समझाना है कि यीशु ने मेरे जीवन को कैसे बदल दिया है।” “लेकिन अगर आप मेरे लिए प्रार्थना करेंगे, तो मुझे विश्वास है कि प्रभु मुझे उस तक पहुँचने का मार्ग दिखाएगा।”

एंजेला ने पहले ही एक महत्वपूर्ण अध्ययन सीख लिया है: बहुत से लोग मसीह के द्वारा एक गहरा परिवर्तन अनुभव करते हैं, फिर भी दूसरों को बताने की अनदेखी कर जाते हैं। जो मसीह ने आपके लिए किया है उसे साझा करना ही गवाही देना है।

पवित्रशास्त्र से खोज

- मसीह ने दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति को चंगा करने के बाद, उसे एक विशेष आदेश दिया। यहाँ आपको “गवाही” की क्या परिभाषा मिलती है? (लूका 8:39)

- यूहन्ना का सुसमाचार गवाही देने के बारे में बहुत कुछ सिखाता है:
 - गवाही देना (या गवाह बनना) साझा करना है (एक चुनें):
 - a. जो आपको सिखाया गया है, वह सत्य है।
 - b. आपने किसी और से जो सुना है।
 - c. जो आपने देखा और सुना है – आपका अपना अनुभव। (यूहन्ना 3:32)
 - यूहन्ना 1:40-41 में अन्द्रियास क्या कर रहा था? _____
 - यीशु के अनुसार परमेश्वर हमसे कौन-सा “कार्य” करने की अपेक्षा करता है? (यूहन्ना 6:28-29) _____
 - यूहन्ना 15:16 में यीशु हमें क्या करने के लिए कहता है? _____
- यदि मसीही बनना आपके लिए अब तक घटित सबसे बड़ी बात है, तो आप किसी अन्य व्यक्ति को सबसे बड़ा उपहार क्या दे सकते हैं? _____
- मत्ती 28:18-20 में यीशु हमें क्या करने की आज्ञा देता है? _____
- आरम्भिक मसीहियों ने कैसे दिखाया कि उन्होंने मसीह को ग्रहण कर लिया है? (प्रेरितों 8:12, 35-38) _____
 क्या आपने विश्वास की यह अभिव्यक्ति की है? (जो लागू हो उसे चिन्हित करें)
 हाँ इस विषय में सोच रहा हूँ
 नहीं मुझे नहीं पता था कि यह इतना महत्वपूर्ण था
- जो लोग मसीह पर विश्वास नहीं करते हैं, उनकी दशा क्या है? (यूहन्ना 3:18) _____
- यदि मैं मसीह का अनुसरण करता हूँ, तो उसने क्या कहा कि वह करेगा? (मत्ती 4:19) _____

8. 1 पतरस 3:15 के अनुसार, मैं मसीह की गवाही देने के लिए स्वयं को कैसे तैयार कर सकता हूँ? _____
9. मसीह का सुसमाचार बाँटने के लिए पौलुस लोगों से कहाँ मिला? (प्रेरितों 17:17; 20:20) _____
10. हमारी गवाही का केंद्र मसीह क्यों होना चाहिए? (यूहन्ना 14:6) _____
11. मसीह के गवाह होने के नाते, हमारा संदेश क्या होना चाहिए? _____
 यूहन्ना 3:16 _____
 रोमियों 6:23 _____
 रोमियों 3:23 _____
 यशायाह 53:6 _____
 यूहन्ना 1:12 _____
12. जब कोई व्यक्ति मसीह को ग्रहण कर लेता है, तो उसके प्रति हमारी क्या ज़िम्मेदारी बनती है? (प्रेरितों 14:21-22) _____

इस अध्ययन के विषय में मेरे सवाल

जीवन में लागू करना

1. गवाही देने में तीन भाग होते हैं: (1) मसीही बनने से पहले मेरा जीवन; (2) मैं कैसे मसीही बना; (3) मेरे जीवन में मसीह का क्या अर्थ है। एक संक्षिप्त गवाही लिखें, जिसे आप किसी मिल के साथ साझा कर सकते हैं।
- _____
- _____
- _____
2. ऐसे तीन लोगों के नाम लिखिए, जिन्हें आप जानते हैं कि उन्हें मसीह की आवश्यकता है। उनके लिए प्रार्थना करें और गवाही देने के मौके ढूँढ़ें।
1. _____
2. _____
3. _____

स्मृति पद

यीशु ने उन से कहा, “मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाऊँगा।” (मत्ती 4:19)

मेरी आत्मिक पत्रिका

अब जब आप जानते हैं कि आपको दूसरों को यीशु मसीह के बारे में बताना है, तो आपको ऐसा करने में डर लग सकता है। अपने डर के बाद भी बोलने की सामर्थ्य आपको कहाँ से मिलेगी? अगला अध्ययन इसी पर चर्चा करेगा।

अध्ययन 7

परमेश्वर के आत्मा से भरा हुआ

वास्तविक जीवन

“प्रभु, आप जानते हैं कि मैं आपके लिए कितना जीना चाहता हूँ। मुझे दुःख है कि मेरा जीवन बहुधा दुर्बल हो जाता है। मैं वास्तव में आपको प्रसन्न करना चाहता हूँ। मैं दूसरों को दिखाना चाहता हूँ कि आपका सच्चा अनुयायी होने का क्या अर्थ है। मैं आपके नाम पर साहसपूर्वक गवाही देने का आत्मविश्वास चाहता हूँ। फिर भी ऐसा लगता है कि मैं लगातार आपको निराश कर रहा हूँ। क्या मेरे जीवन में कुछ कमी है, प्रभु?” यह जेसन की सच्ची प्रार्थना है।

जेसन अकेला ऐसा व्यक्ति नहीं है, जो यह अनुभव करता है कि वह परमेश्वर के लिए और अधिक करना चाहता है, लेकिन उसके पास सामर्थ्य की कमी है। इस दुविधा का उत्तर स्पष्ट है: हमें उसकी आत्मा के माध्यम से परमेश्वर की सामर्थ्य का अधिक हिस्सा प्राप्त करना चाहिए। इसीलिए पौलुस ने अपने समय के मसीहियों को “आत्मा से परिपूर्ण होने” का निर्देश दिया (इफिसियों 5:18)।

पवित्रशास्त्र से खोज

- यीशु ने अपने शिष्यों को पवित्र आत्मा के विषय में सिखाने में बहुत समय बिताया। यूहन्ना ने उसकी कुछ शिक्षाएँ दर्ज की:
 - यीशु ने किसके विषय में कहा कि वह हमें परमेश्वर के साथ उमड़ने वाला अनुभव देगा (जीवित जल की नदियों के समान)? (यूहन्ना 7:38-39) _____
 - हमें कौन सिखाएगा? (यूहन्ना 14:26) _____
 - सत्य का आत्मा किसके विषय में गवाही देता है? (यूहन्ना 15:26) _____
 - एक मसीही के जीवन के किस चरण में पवित्र आत्मा सबसे पहले कार्य करता है? (यूहन्ना 3:5) _____
- मसीह के चेलों को गवाही देने के लिए आवश्यक सामर्थ्य किससे प्राप्त करने की आवश्यकता थी? (प्रेरितों 1:8) _____
- मसीह को स्वीकार करने के बाद भी शाऊल (पौलुस) को आत्मिक रूप से किस वस्तु की आवश्यकता थी? (प्रेरितों 9:17) _____
- कुरिन्थियों की कलीसिया में आत्मा से परिपूर्णता की कमी के प्रमाणों ने ईर्ष्या जैसे गलत मनोवृत्तियों को दर्शाया, जो यह दर्शाता है कि वे अभी भी क्या थे? (1 कुरिन्थियों 3:1, 3) _____
- पवित्र आत्मा का वह विशेष कार्य क्या है, जो हमें शुद्ध करता है और परमेश्वर के लिए पूरी तरह से अलग करता है? (1 पत्रस 1:2) _____
- यीशु ने अपने चेलों के लिए क्या प्रार्थना की? (यूहन्ना 17:17) _____
- जब परमेश्वर ने आरम्भिक मसीहियों को पवित्र आत्मा दिया, तो उसने उनके अशुद्ध हृदयों के बारे में क्या किया? (प्रेरितों 15:8-9) _____
- हमें अपने जीवन के उस हिस्से के बारे में क्या करना चाहिए, जो अशुद्ध है? (2 कुरिन्थियों 7:1) _____
- परमेश्वर हमारी पवित्रता को कितना पूर्ण देखना चाहता है? (बाइबल के विभिन्न अनुवादों में एक ही विचार के लिए अलग-अलग शब्दों का उपयोग किया जा सकता है: “पवित्र,” “शुद्धिकरण,” या “पवित्रीकरण”) (1 थिस्सलुनीकियों 5:23) _____
- कौन मुझे “पूरी रीति से पवित्र” बनाएगा? (1 थिस्सलुनीकियों 5:23) _____

11. _____ का नियम मुझे “पाप की और मृत्यु की व्यवस्था” से स्वतंत्र करता है। (रोमियों 8:2)
12. कुरिन्थियों के गलत रवैये से पता चला कि उनमें मसीही जीवन का कौन-सा आवश्यक गुण नहीं था? (1 कुरिन्थियों 13:13) _____
13. मैं _____ से परमेश्वर का प्रेम प्राप्त कर सकता हूँ (रोमियों 5:5)।
14. पवित्र आत्मा से भर जाने के बाद, मुझे अब _____ के अनुसार नहीं, वरन _____ के अनुसार जीना चाहिए (रोमियों 8:4-5)।

इस अध्ययन के विषय में मेरे सवाल

जीवन में लागू करना

1. पवित्र आत्मा के साथ मेरा वर्तमान में सम्बन्ध क्या है?
- _____
- _____
- _____
- _____
2. शुद्ध और सशक्त मसीही जीवन वह है, जो आत्मा से भरा हुआ है, और दूसरों के लिए भी उमड़ता है। क्या आप आत्मा से भरे रहना चाहेंगे? यहाँ चार चरण दिए गए हैं:
- परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको उसकी परिपूर्णता में आत्मा दे (लूका 11:13)।
 - अपना पूरा जीवन परमेश्वर को सौंप दें (रोमियों 12:1-2)।
 - आंतरिक शुद्धि की अपनी आवश्यकता को स्वीकार करें (प्रेरितों 15:8-9)।
 - विश्वास के कार्य के द्वारा पवित्र करने वाले आत्मा को प्राप्त करें (प्रेरितों 15:8-9; 1 थिस्सलुनीकियों 5:23-24)।

स्मृति पद

“शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे; और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें।” (1 थिस्सलुनीकियों 5:23)

मेरी आत्मिक पत्रिका

इन अध्ययनों और अपने मसीही जीवन में आपने जो प्रगति की है, उसके लिए बधाई। अब रुकें नहीं! और याद रखें, आप इसमें अकेले नहीं हैं। अगला अध्ययन इस पर चर्चा करेगा।

अध्ययन 8

परिवार का हिस्सा

वास्तविक जीवन

जेसन को एक परिवार मिल गया है। डेमन, जेनिस और एंजेला उस परिवार का हिस्सा हैं। आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि वे उसी की उम्र के हैं, एक ही स्कूल में पढ़ते हैं, और उनकी कई रुचियाँ समान हैं। हालाँकि, जेसन ने जो परिवार पाया है, वह केवल मिलता से कहीं अधिक व्यापक और गहरा है। वह अपनी नई कलीसिया के अन्य लोगों, जैसे 80 वर्षीय दादी रीड और 7 वर्षीय जिमी के साथ भी घनिष्ठ सम्बन्ध अनुभव करता है। जेसन ने यह जान लिया है कि अब जब वह एक मसीही बन गया है, तो हर अन्य सच्चा मसीही उसका भाई या बहन बन गया है। आपके लिए भी यही सत्य है! यह नया परिवार जिससे आप जुड़े हैं, उसे “कलीसिया” कहा जाता है। अपने आत्मिक परिवार को भरपूर प्रेम अवश्य दिखाएँ।

पवित्रशास्त्र से खोज

- बाइबल मसीह के अनुयायियों को अलग-अलग तरीकों से सम्बोधित करती है। प्रेरितों 11:26 में मसीह के अनुयायियों का वर्णन करने वाले तीन शब्दों की सूची बनाएँ:
 - _____
 - _____
 - _____
- क्योंकि हमें मसीहियों के रूप में एक साथ मिलकर काम करना चाहिए, इसलिए कलीसिया को कभी-कभी _____ कहा जाता है (1 कुरिन्थियों 12:27)।
- कलीसिया का मुखिया कौन है? (इफिसियों 5:23) _____
- मसीह का कौन-सा कार्य हमें दिखाता है कि कलीसिया उसके लिए कितनी महत्वपूर्ण है? (इफिसियों 5:25) _____
- कलीसिया का हिस्सा बनने के लिए, मसीह के साथ मेरा सम्बन्ध कैसा होना चाहिए? (इफिसियों 5:24) _____
- वह कैसी पृष्ठभूमि थी, जहाँ पौलुस ने मसीह में जीने का अपना तरीका सिखाया? (1 कुरिन्थियों 4:17) _____
- यूहन्ना के सुसमाचार के अध्ययन ने आपको कलीसिया के बारे में क्या सिखाया है?
 - संसार कैसे जानेगा कि मैं सच्ची कलीसिया का हिस्सा हूँ (मसीह का शिष्य हूँ)? (यूहन्ना 13:35) _____
 - पतरस और उसके बाद आने वाले सभी पास्टर्स का कलीसिया के प्रति क्या विशेष उत्तरदायित्व था? (यूहन्ना 21:16) _____
- 1 कुरिन्थियों 11:23-26 को पढ़ें। कलीसिया इस घटना को मनाना जारी रखती है, जिसे “सहभागिता” या “प्रभु भोज” कहा जाता है। जब हम प्रभु भोज में भाग लेते हैं, तो हमें क्या स्मरण आता है? _____
- मुझे अपने कलीसिया परिवार में भाई या बहन के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए? (गलातियों 6:2) _____
- जब पवित्र आत्मा लोगों को विशेष वरदान देता है, तो उसका उद्देश्य क्या होता है? (1 कुरिन्थियों 12:4, 7) _____

11. कुछ कलीसियाएँ सामर्थी और प्रेमपूर्ण होती हैं, जबकि अन्य नहीं होती। निम्नलिखित दो कलीसियाओं में से कौन सी कलीसिया सबसे अधिक उस कलीसिया जैसी है, जिसे आप बनाना या उससे जुड़ना चाहेंगे? (किसी एक को चुनें।)
- a. यरूशलेम की कलीसिया (प्रेरितों 4:32-33)
 - b. लौदीकिया की कलीसिया (प्रकाशितवाक्य 3:14-17)
12. प्रेरितों की शिक्षा, संगति, रोटी तोड़ने और प्रार्थना के प्रति आरम्भिक मसीहियों की प्रतिक्रिया क्या थी? (प्रेरितों 2:42) _____
13. अगर मैं परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहता हूँ, तो मुझे किस बात का ध्यान रखना चाहिए? (इब्रानियों 10:25) _____

इस अध्ययन के विषय में मेरे सवाल

जीवन में लागू करना

1. कलीसिया के निर्माण के लिए परमेश्वर ने आपको कौन से वरदान – विशेष तोड़े – दिए हैं? _____
2. अपने विश्वास के माध्यम से, आप यीशु मसीह और आत्मिक अर्थ में, अन्य सभी सच्चे मसीहियों के साथ एक हो गए हैं। आपको कलीसिया में जुड़ने के आधिकारिक कदम पर विचार करना चाहिए। यह संगति इतनी महत्वपूर्ण है, और इसका कार्य इतना बड़ा है कि मसीहियों को हर सम्भव तरीके से एक होने की आवश्यकता है। अपनी कलीसिया और पास्टर की सहायता से, आप मसीह में बढ़ते रहेंगे। कुछ कारण जिनकी वजह से मुझे कलीसिया में जुड़ना चाहिए: _____

स्मृति पद

“और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो, त्यों त्यों और भी अधिक यह किया करो।” (इब्रानियों 10:25)

मेरी आत्मिक पत्रिका

इन अध्ययनों को पूरा करने के लिए बधाई! परमेश्वर के लिए साहसिक कार्य करते हुए आपके आगे और भी शानदार दिन आने वाले हैं!

विशेष मान्यता

नाम

पूरे किए हुए युवाओं के लिए मूलभूत बाइबल अध्ययन

पास्टर

अध्ययन साथी

दिनांक

कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए; पर कवन, और चल चलन, और प्रेम,
और विश्वास, और पवित्रता में विश्वासियों के लिये आदर्श बन जा।

1 तीमथियुस 4:12

प्रगति का रिकॉर्ड

नाम _____

सम्पर्क सूचना _____

दिनांक _____

अध्ययन संख्या	मसीही बनने की तिथि	टिप्पणियाँ
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		

अध्ययन 1

देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर भोजन करूँगा और वह मेरे साथ।

प्रकाशितवाक्य 3:20

अध्ययन 2

तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है। परमेश्वर सच्चा है और वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको।

1 कुरिन्थियों 10:13

अध्ययन 3

मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरुद्ध पाप न करूँ।

भजन संहिता 119:11

अध्ययन 4

अब तक तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं माँगा; माँगो, तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाएगा।

यूहन्ना 16:24

अध्ययन 5

इसलिए तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो।

1 कुरिन्थियों 10:31

अध्ययन 6

यीशु ने उन से कहा, “मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाऊँगा।”

मत्ती 4:19

अध्ययन 7

शांति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी तरह से पवित्र करे; और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें।

1 थिस्सलुनीकियों 5:23

अध्ययन 8

और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसा कि कितनों की रीति है, पर एक-दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो त्यों त्यों और भी अधिक यह किया करो।

इब्रानियों 10:25